NEHRU
BAL PUSTAKALAYA

सरस कहानियाँ

मनोज दास

नेहरू बाल पुस्तकालय

सरस कहानियाँ

लेखक

मनोज दास

चित्रकार

मारिओ

अनुवादक

बालकराम नागर

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

पहला संस्करण 1970 (शक 1892)
दसवीं आवृत्ति 1990 (शक 1912)

© मनोज दास, 1970

Stories of Light and Delight (*Hindi*)

रु. 6.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित।

1. राजा और गिलहरी

किसी देश में एक राजा राज्य करता था। खूब पढ़ा-लिखा, विद्वान, देखने में सुंदर और स्वस्थ। उसमें कोई कमी थी तो यह कि घमंडी बहुत था। अपने बराबर किसी को नहीं गिनता था। उसका विचार था कि पूरी दुनिया में वही सर्वश्रेष्ठ और शक्तिशाली है।

एक दिन वर्षा में घूमते हुए, उसने अपने बूढ़े मंत्री से कहा, "इस राज्य में ऐसा कोई नहीं जो मेरी बराबरी कर सके। ऐसा कोई नहीं जो मेरे सामने डींग हाँक सके।"

बूढ़ा मंत्री, जो प्राय: नौजवान राजा की हाँ में हाँ मिलाया करता था,

यह सुनकर चुप रहा, मुस्कराया तक नहीं ।

राजा को यह देखकर बड़ा अचरज हुआ । उसने पूछा, "क्यों, क्या बात है, मंत्रिवर ? आप मौन धारण क्यों किये हुए हैं ?"

इस बार मंत्री ने मुस्कराकर उत्तर दिया, "अन्नदाता, अगर आप सच ही सुनना चाहते हैं तो मैं निवेदन करूँगा कि यह विश्वास से नहीं कहा जा सकता कि कोई भी कभी आपके सामने डींग नहीं हाँकेगा । हाँ, यह मानी हुई बात है कि पूरे राज्य में आपसे बढ़ कर कोई नहीं, लेकिन फिर भी यह संभव है कि कहीं कोई ऐसा प्राणी हो जो यह न मानता हो । घमंड किसमें नहीं होता ! देखने में आया है कि कोई बिल्कुल निर्बल भी अपने को बड़ा तीसमारखाँ समझने लगता है । इसलिए हो सकता है कि ऐसा कोई प्राणी, जो आपकी महानता के बारे में न जानता हो, किसी दिन आपके सामने शेखी बघार बैठे । बुद्धिमत्ता इसी में है कि उस पर कोई ध्यान न दिया जाय । उसे छोटी मुँह बड़ी बात समझ कर टाल दिया जाय ।"

मंत्री बात कर ही रहा था कि एक छोटी-सी गिलहरी सामने आ निकली और साँस भर-भर कर खम्भे पर चढ़ने लगी । गिलहरी ने अपने अगले पंजों में एक स्वर्ण मुद्रा ऐसे दबा रखी थी मानो वह राजा और मंत्री को दिखा रही हो ।

राजा यह देखकर मुस्करा उठा। राजा को मुस्कराना देखकर गिलहरी गाने लगी—

"मेरे पास इतनी दौलत, राजा !
तेरे पास है कितनी ?
छिःछिः मुझको घूर रहा है,
मेरी दौलत से जलता है ?"

राजा यह सुनकर आग-बबूला हो उठा और इससे पहले कि मंत्री कुछ कहे, वह गिलहरी की ओर लपका। गिलहरी कब हाथ आनेवाली थी ? दुम दबाकर भाग खड़ी हुई, मगर उसकी स्वर्ण मुद्रा नीचे गिर गयी। राजा ने मंत्री के सामने मुद्रा उठाकर जेब में रख ली और फिर शान से मुस्कराया। मंत्री यह सब देखता रहा, बोला कुछ नहीं।

उस संध्या को, राजा और मंत्री पड़ोसी देश के दूतों से किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर सलाह-मशविरा कर रहे थे। अचानक क्या देखते हैं कि छत पर से गिलहरी चिल्ला रही है,

"मेरे धन के बलबूते पर क्यों इतराता है, रे राजा !
सुन ले तू कान खोलकर,
सुन ले फिर कान खोलकर।"

राजा का खून खौल गया। वह आपे से बाहर हो रहा था, मगर जैसे-तैसे उसने अपने ऊपर काबू किया, क्योंकि उस समय वह सम्मानित अतिथियों के बीच था। गिलहरी एक खम्भे से दूसरे पर फुदक रही थी और यही दोहराती जाती थी—"सुन लो सारे कान खोल कर, सुन लो सारे कान खोल कर।"

राजदूतों ने यह सब सुना, मगर चुप रहे कि कहीं राजा बुरा न मान जाय।

जब अतिथि अपने-अपने घर लौट गये, राजा ने गिलहरी को ढूँढना शुरू किया। कोने-कोने में देखा, मगर गिलहरी कहीं न मिली। क्रोध से वह पागल हो रहा था। उस रात उसे नींद नहीं आयी।

राजा का यह नियम था कि प्रतिदिन सवेरे वह गरीबों को दान दिया करता था। अगले दिन प्रातः जब वह गरीबों को धन बांट रहा था, गिलहरी आ धमकी और लगी चिल्लाने—

"वाह रे राजा तेरी शान !
लुटा-लुटा कर मेरी दौलत बनता है तू दानी,
वाह रे, ओ अभिमानी !"

राजा ने अपने कर्मचारियों को आदेश दिया कि वे इस गिलहरी को पकड़ कर लायें। लेकिन गिलहरी की जात काबू में आनेवाली कहाँ ? सब अपना-सा मुंह लेकर लौट आये। गिलहरी हाथ न आयी। एक बार फिर राजा को अपना गुस्सा पीना पड़ा।

थोड़ी देर बाद जब राजा दोपहर के खाने के लिए गया तो उसने देखा कि गिलहरी खिड़की से झांक-झांक कर गा रही थी—

"देखो भाई तमाशा,
मेरी दौलत के बूते पर,
राजा खाता दूध-बताशा।"

यह सुनकर राजा को इतना क्रोध आया कि एक कौर भी निगलना उसके लिए असम्भव हो गया। उसके नौकर-चाकर गिलहरी को पकड़ने के लिए इधर-उधर दौड़ते फिरे, मगर गिलहरी उन सब को धता बता गयी।

उसी रात जब राजा खाने के लिए गया तो वह गिलहरी फिर कहीं से आ धमकी । वह फिर वही गीत दोहराने लगी जिसने राजा के लिए दोपहर का खाना दूभर कर दिया था ।

अब तक राजा बेबस हो गया था। उसने जेब में से गिलहरी की स्वर्ण मुद्रा निकाली और उसकी ओर फेंक दी । गिलहरी ने तुरंत अपनी मुद्रा उठायी मगर जाते-जाते यह सुना गयी—

"मैं जीत गयी, मैं जीत गयी,
एक गिलहरी जीत गयी,
हार गया रे राजा !"

यह सुनना था कि एक पागल की तरह राजा बेतहाशा गिलहरी के पीछे भागा । गिलहरी इस बार भी कहीं गायब हो गयी । उस रात भी राजा की सारी रात आँखों में कटी । रात भर गिलहरी के बोल उसके कानों में गूंजते रहे और वह बेचैनी से करवट बदलता रहा ।

प्रातःकाल राजा ने अपने मंत्री को बुलवा कर कहा—"मेरा विचार है कि अपनी सेना को बुलाकर हर एक सैनिक को आज्ञा दूं कि राज्य में एक-एक गिलहरी को पकड़ कर मार डाले । इसके अलावा कोई रास्ता नहीं ।"

मंत्री ने यह सुन कर कहा, "अन्नदाता, आपका क्रोध मेरी समझ में आता है। पर इसका क्या विश्वास कि हमारे सैनिक राज्य की सभी गिलहरियों को समाप्त कर सकेंगे। लाखों गिलहरियां हैं—खेतों में, घने जंगलों में जहाँ मनुष्य की पहुँच नहीं, पहाड़ की चोटियों पर और न जाने कहाँ-कहाँ, और फिर हमारे राज्य में घुसने के लिए किसी गिलहरी को कोई प्रवेश-पत्र तो चाहिए नहीं। पड़ोस के देशों की गिलहरियां बेखटके हमारे राज्य में घुस सकती हैं। हमारे सिपाही जो इतने वहादुर हैं, उन्हें कितना दुख और कितनी निराशा होगी अगर उनसे कहा जाय कि जाकर गिलहरियों से लड़ो, और फिर जब उन्हें इसमें सफलता नहीं मिलेगी तो और भी दुखी होंगे। इसके अलावा, हो सकता है कि वह नटखट गिलहरी जो आप को तंग कर रही है, बच निकले और हमारे सब किये-कराये पर पानी फिर जाय। और फिर यह तो सोचिए, मेरे स्वामी, कि लोग क्या कहेंगे। आगे लिखा जानेवाला इतिहास आपके बारे में क्या कहेगा! कल को विद्यार्थी जब पढ़ेंगे कि एक ऐसा राजा भी था जिसने गिलहरियों से मोर्चा ठाना तो वे हँसेंगे नहीं?

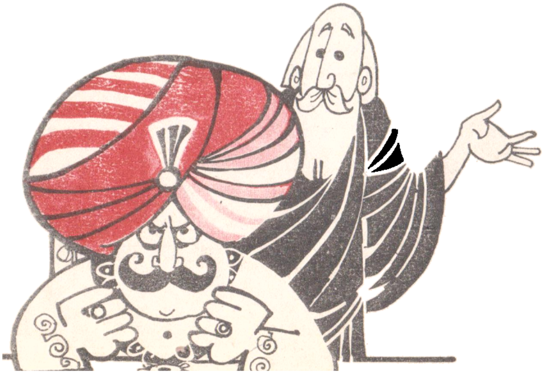

हताश होकर राजा ने पूछा, "तो फिर हम क्या करें ?"

"बस गिलहरी की ओर ध्यान न दीजिए, महाराज । पहली वार जव आपने उसे बाग में देखा था और उसने शेखी बघारी थी, तभी आप उसकी ओर ध्यान न देते तो आज यह नौवत न आती । खैर, बीती ताहि विसार दे, आगे की सुध ले ।"

थोड़ी देर बाद वह गिलहरी फिर दिखायी दी और उसने अपना वही राग अलापा, "एक गिलहरी से डर कर राजा ने उसका धन लौटाया ।"

इस वार राजा चुपचाप सुनता रहा । छोटे मुँह वड़ी वात सुनकर मुस्कराता रहा ।

गिलहरी यह देखकर हैरान रह गयी । उसने राजा की ओर अचम्भे से देखा और फिर विना कुछ कहे, ऐसी नौ-दो-ग्यारह हुई कि फिर कभी सूरत न दिखायी ।

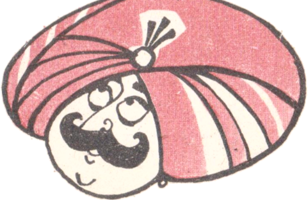

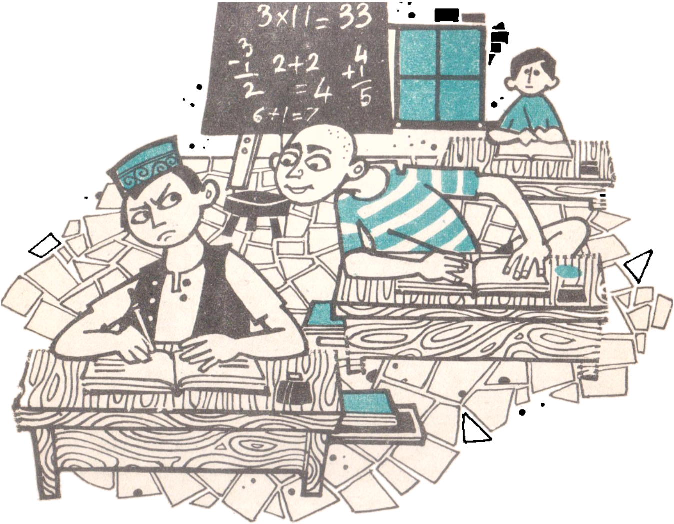

2. फुसफुसाहट

बहुत साल पहले की बात है। एक छोटे से गाँव में दो लड़के रहते थे— रघु और राजू। दोनों एक-ही उम्र के थे और एक-ही स्कूल में पढ़ते थे। रघु ईमानदार था और मेहनत से काम करता था। उसके माता-पिता और अध्यापक दोनों को उससे बड़ी आशाएं थीं। लेकिन राजू की दूसरी बात थी। वह चतुर तो था, मगर बेईमान था। परीक्षा में भी बेईमानी करने से नहीं चूकता था और दूसरे विद्यार्थियों की नकल टीप लेता था। वह अपने सिवा किसी की नहीं सोचता था। दूसरों को धोखा देने के लिए मीठा बोलता और मुस्कराता रहता था। राजू ने कई बार रघु से चोरी करने और दूसरों को झांसा देने में मदद करने के लिए कहा, लेकिन रघु ने साफ इन्कार कर दिया।

इससे राजू रघु से चिढ़ने लगा। फिर भी रघु राजू को समझाया करता, "तुम्हें किसी अच्छे काम के लिए मेरी ज़रूरत हो तो मैं हमेशा हाजिर हूँ। बुरे काम में कोई मदद नहीं कर सकता।"

पढ़ाई-लिखाई समाप्त कर, राजू गाँव छोड़कर एक बड़े शहर में रहने लगा। रघु अपने गाँव में ही सीधे-सादे ढंग से रहता रहा। वह अपनी बाप-दादा की जमीन में खेती-बाड़ी का काम देखता-भालता। गाँव के सब लोग उसे जानते-पहचानते थे और सभी उसे बहुत चाहते थे।

इस तरह कई साल बीत गये। इस बीच रघु और राजू को एक दूसरे से मिलने का कोई अवसर न मिला। एक दिन रघु ने सुना कि राजू की चतुराई से राजा इतना खुश हुआ कि उसने उसको अपना प्रधान मंत्री बना लिया। रघु को यह समाचार सुन कर खुशी नहीं हुई क्योंकि वह जानता था कि राजू बेईमान है। लेकिन वह इससे दुखी भी नहीं हुआ क्योंकि उसे ऐसी किसी बात की चिन्ता नहीं थी जिससे उसका कोई मतलब न हो।

एक दिन रघु अपने गाँव के एक उत्सव के लिए सामान खरीदने शहर गया। शहर पहुँचते-पहुँचते उसे दोपहर हो गयी। धूप बहुत तेज थी। रघु को सख्त प्यास लगी थी। पास ही एक महल जैसी इमारत देखी तो वह उसके अन्दर घुसा। वह वहाँ के किसी नौकर से पानी मांगने ही वाला था कि भवन का मालिक आ गया। रघु को देखकर वह आश्चर्य से बोला, "रघु! तुम यहाँ कैसे?" वह राजू था। रघु राजू को पहचान न सका। उसने बहुत ही शानदार पोशाक पहन रखी थी। जब वह चलता तो बढ़िया रेशम उसके तन पर लहराती। सोने के हार, हीरे की अंगूठियां, सूरज की रोशनी में चमचम चमकतीं। सुनहरी-सफेद पगड़ी के बीचोंबीच एक झिलमिलाता पुखराज उसके सिर की शोभा को बढ़ा रहा था। इसके अलावा राजू इतना मोटा हो गया था कि छोटे-मोटे हाथी जैसा लग रहा था।

रघु ने राजू को नमस्कार किया। राजू ने उसका कोई उत्तर नहीं दिया बल्कि उस पर तरस खाते हुए कहा, "रघु! तुम कैसे दरिद्र दिखायी दे रहे हो! और तुमने यह कपड़े पहने हैं या चीथड़े लटकाये हैं? लगता है कि

तुम सारा रास्ता पैदल चल कर आये हो। सुना है तुम्हारे पास घोड़ा तो क्या, एक खच्चर भी नहीं। अब जरा मेरी ओर देखो। देखो तो मैं कैसा लग रहा हूँ। राजा जैसा, है न? जरा मेरे कपड़े भी देखो। एक नजर मेरे महल पर भी डालो। देवता भी मुझसे ईर्ष्या करते हैं, और आज मैं जो कुछ बना हूँ, वह सब अपनी खूबियों की वजह से। तुम तो रहे बुद्धू के बुद्धू! एक खच्चर तक न ले सके! तुमने मेरी बात मानी होती तो आज मेरी तरह राजा बने फिरते।"

"मैं गरीब ज़रूर हूँ," रघु ने उत्तर दिया, "मगर मैं खुश हूँ। और जहाँ तक मेरे बुद्धू होने की बात है, दिल में तो तुम जानते हो कि यह बात कितनी सच है। अगर मैं चाहता तो तुम्हारे ही जैसा धनवान बन सकता था। मगर मैं तुम्हारे जैसे हथकंडों का इस्तेमाल जीते-जी कभी नहीं कर सकता। पैसे के लिए बेईमानी नहीं कर सकता।"

"बन्द करो यह बकवास," राजू ने चीख कर कहा। "अगर तुम इतने ही योग्य हो तो मेरे यहाँ हाथ पसारने क्यों आये?"

"मैं तुम्हारे यहाँ हाथ पसारने नहीं आया," रघु ने जवाब दिया। "मुझे प्यास लग रही थी इसलिए इधर आ गया। मुझे तो मालूम ही नहीं था कि यह तुम्हारा घर है। वरना कभी न आता।"

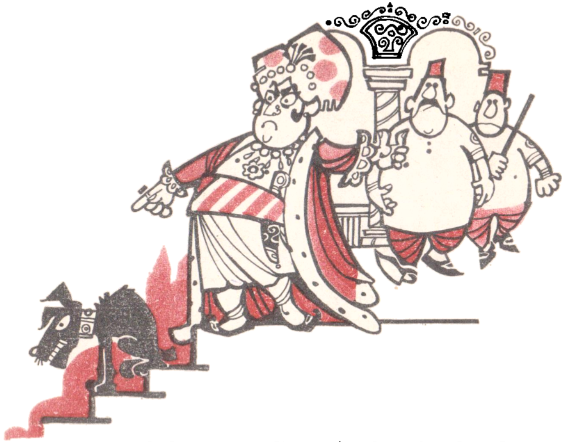

"पानी ! तुम्हारे लिए इस घर में एक बूंद भी पानी नहीं । निकल जाओ यहाँ से," राजू ने गुस्से से कांपते हुए कहा ।

"अच्छी बात है भाई ! जाता हूँ ।" रघु ने शांत भाव से उत्तर देते हुए कहा और वापस मुड़ गया :

मगर राजू का पेट गुस्से से ही न भरा। उसने अपने दो नौकरों से कहा कि वे रघु को उठाकर बाहर सड़क पर पटक दें। इस पर रघु को भी क्रोध आ गया। वह बोला, "मैंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा। अगर तुम बेमतलव मेरा अपमान करोगे तो नतीजा बुरा होगा ।"

राजू ने आपे से बाहर होकर कहा, "तुम कहते हो कि तुमने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा ? क्या तुमने परीक्षाओं में मुझे मदद देने से इन्कार नहीं किया ? अब मेरा समय आया है। आज मैं जी भर कर तुम्हारा अपमान करूँगा। अब तुम मेरा बिगाड़ भी क्या सकते हो ? मैं राजा का प्रधान मंत्री हूँ। जितने भी और मंत्री हैं, उन सभी को मैं भरती करता हूँ। राजा का सेनापति मेरा मित्र है। खजांची मेरा ससुर है। मुख्य न्यायाधीश मेरा साला है। समझे, बेटा ?"

दोनों नौकर राजू को उठाकर बाहर फेंकने लगे तो वह कहता रहा "तुम्हारा अन्त अच्छा नहीं होगा . . . अच्छा नहीं होगा ।"

समय बीतता गया । कुछ महीने बाद, एक दिन राजा बगीचे में टहल रहा था कि एक लम्बी दाढ़ीवाला आदमी उधर आता दिखायी दिया । उस अजनबी ने राजा को एक से एक सुन्दर उपहार दिये और कहा, "महाराज ! आपकी आज्ञा हो तो मैं गुप्त रूप से हर रोज़ आपको पचास सोने की मुहरें देना चाहता हूँ । बदले में मैं इतना ही चाहता हूँ कि आप हर रोज मुझे अपने दरबार में आने दें और दो मिनट तक आपके कान में कुछ फुसफुसाने दें ।"

राजा ने सोचा, सौदा अच्छा है । अगर दो मिनट फुसफुस सुनने के लिए पचास मुहरें मिलें तो क्या बुरा है ?

राजा ने कहा, "हमें कोई आपत्ति नहीं । तुम आकर हमारे कान में फुसफुसा सकते हो ।"

अगले दिन जब राजा अपने मंत्रियों और दरबारियों के साथ दरबार में बैठा था, एक अजनबी, लोगों को धक्का देता हुआ, राजा के पास जा पहुँचा । राजा उसे देखकर मुस्कराया । अजनबी ने उसके कान में मुँह देकर फुसफुसाते हुए कहा, "आज का दिन बड़ा अच्छा है । उजली-उजली धूप और आसमान में बादल का एक भी टुकड़ा नहीं ।"

इस तरह फुसफुसाते हुए उस अजनबी ने राजू की ओर कई बार कनखियों से देखा । इसके बाद उसने चुपचाप राजा की जेब में मुहरें डालीं और चलता बना । प्रधान मंत्री राजू की हालत बुरी हो रही थी । भाग कर उसने अजनबी का पीछा किया और हैरान-परेशान होकर पूछा, "आप बुरा न मानें तो क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि आप महाराज से किस विषय पर बात कर रहे थे, और बात करते हुए बीच-बीच में आप मेरी ओर क्यों घूर रहे थे ?"

अजनबी जानता था कि राजू उससे यही सवाल पूछेगा । यह तो आप समझ ही गये होंगे कि यह अजनबी और कोई नहीं, भेस बदले रघु ही था !

रघु ने कहा, "आप मुझसे ऐसी गुप्त बात बताने के लिए क्यों कह रहे हैं जिसे मेरे और राजा के सिवा कोई नहीं जानता ?"

यह सुनकर राजू की घबराहट चौगुनी हो गयी। उसने घुटने टेककर रघु के कदमों में सौ मुहरें रखीं और गिड़गिड़ाकर कहा, "शाम को मैं आपको इतनी ही मुहरें और दूंगा। मुझे यह रहस्य बता ही दीजिए। आपके पाँव पड़ता हूँ ।"

पहले तो रघु ने बड़ी आनाकानी की फिर थोड़ी देर और खुशामद करवाने के बाद बोला, "मामला बड़ा गंभीर है । कई लोगों ने तुम्हारे खिलाफ राजा से शिकायत की है । महाराज ने उसकी जाँच करने के लिए मुझसे कहा है ।" राजू ने बड़ी अधीरता से पूछा, "महोदय ! आपने राजा से आज इसके बारे में क्या कहा ?"

"मैंने कहा," राजू ने जवाब दिया, "अभी मैं जाँच कर रहा हूँ ।"

"महाप्रभो !" राजू ने गिड़गिड़ाकर कहा, "मेरे ऊपर दया कीजिए । मैं आपको एक हजार सोने की मुहरें दूंगा ।"

रघु ने मुंह बनाकर कहा, "देखेंगे, देखेंगे, इस मामले में क्या हो सकता है ।"

अगले दिन रघु फिर राजा के दरबार में पहुँचा और उसी प्रकार उसके कान में फुसफुसाते हुए बोला, "तड़के तक तो उत्तरी हवा बड़ी तेज़ चल रही थी, पर अब ऐसा लगता है कि उसकी दिशा बदल जायेगी ।" इस तरह

फुसफुसाते हुए उसने पहले की तरह कई बार राजू की ओर देखा। अजनबी की बेसिर-पैर की बातें सुनकर राजा मुस्कराया।

इन बेमतलब बातों को सुनने के बदले में राजा को पचास मुहरें मिल जाती थीं। वह प्रसन्न था।

अब तो राजू की वही दशा थी जैसे जाल में फँसी मछली। रघु से मिलने पर उसे पता चला कि फिलहाल राजा इस बात से सन्तुष्ट है कि उसके प्रधान मंत्री ने कोई अपराध नहीं किया है। राजू ने रघु को धन्यवाद दिया और एक हजार सोने की मुहरें दीं।

अगले दिन जब रघु राजा के कान में कुहरे और बूंदाबांदी की बात फुस-फुसा रहा था तो बार-बार सेनापति की ओर घूरता जाता था। सेनापति ने भी वही किया जो प्रधान मंत्री ने किया था। इस तरह रघु को एक हज़ार सोने की मुहरें और मिल गयीं। अब तो उसने एक के बाद एक सभी मंत्रियों, खजांची और अंत में मुख्य न्यायाधीश को भी इसी प्रकार घबराहट में डाल दिया। हर रोज राजा को दी जानेवाली पचास मुहरों के बदले में अब तक रघु ने दस हजार से भी ज्यादा मुहरें इकट्ठी कर लीं।

एक दिन राजा का आम दरबार लगा था। उसमें दरबारी, अधिकारी और प्रजा सभी मौजूद थे। ऐसे भरे दरबार में रघु ने राजा के सामने खड़े होकर कहा, "महाराज! इतने दिनों से मैं आपके कान में ऊल-जलूल कहता आ रहा हूं। लेकिन आज मैं आपको यह थैली भेंट करने आया हूँ। इसमें ऐसा ऊल-जलूल कुछ नहीं। काम की चीज़ है।" यह कहकर उसने एक

रेशम की थैली राजा के सामने रख दी। दस हजार सोने की मुहरों की खन-खनाहट राजा के कानों को मधुर संगीत जैसी लगी। वह मुस्कराया, लेकिन अजनबी की यह हरकत उसे बड़ी विचित्र लगी।

"अपनी बात समझा कर कहो," राजा ने कहा।

जो कुछ हुआ था रघु ने सब साफ-साफ कह सुनाया। फिर मुहरों की तरफ इशारा करके बोला, "यह इस बात का पक्का प्रमाण है कि आपके चारों ओर बेईमान ही बेईमान हैं। अगर प्रधान और दूसरे मंत्री ईमानदार होते, अगर सेनापति ने सच्चाई से कर्तव्य-पालन किया होता, अगर खजांची और मुख्य न्यायाधीश भ्रष्ट न होते तो मेरे उनकी ओर ताकने भर से इतने घबरा क्यों जाते? कर नहीं तो डर नहीं।"

उसकी बात सुनते ही राजा समझ गया कि उसके अधिकारी लोग अपने अपने पदों के लायक नहीं हैं। वे सब के सब भ्रष्टाचारी हैं। उनके मन में खोट है और अपने अपराधों के डर से वे हर समय घबराये रहते हैं। राजू और उसके साथियों ने धोखा-धड़ी, बेईमानी और झूठ के सहारे अपनी जो पद-प्रतिष्ठा बना रखी थी, वह बालू के घरौंदे की तरह ढह गयी। राजा ने रघु को अपना प्रधान मंत्री बना लिया। और रघु ने कुछ ही दिनों में दूसरे खाली पदों पर मेहनती और ईमानदार आदमी नियुक्त कर दिये। अब राजकाज बड़े ही सुन्दर और सुचारु रूप से चलने लगा।

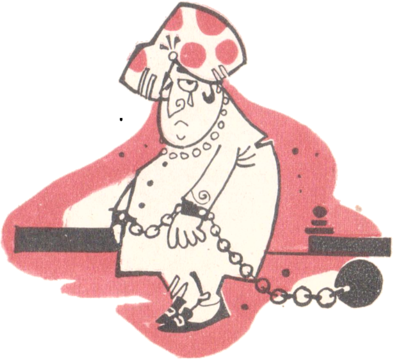

3. धूर्त नगरी

बंरसों पुरानी बात है, दूर किसी देश में एक व्यापारी और उसका लड़का रहते थे। लड़के का नाम था अर्जुन। एक दिन व्यापारी ने उसको बुलाकर कहा, "बेटा! मेरे पास बड़ी अच्छी नस्ल के दो घोड़े हैं। मैंने उनकी बहुत देखभाल की है। इनको किसी ऐसी जगह ले जाकर बेचा जाय जहाँ अच्छे घोड़े न मिलते हों, तो एक घोड़ा कम से कम सौ मुहरों में बिके। धुर दक्षिण में ऐसा एक देश है। पर मैं बूढ़ा हो गया हूँ। इतनी लम्बी यात्रा मैं नहीं कर सकता। तुममें अगर साहस है तो ये घोड़े मैं तुम्हें दे सकता हूँ। दक्षिण का राजा इनका और भी अधिक मोल देगा, क्योंकि वहाँ इस नस्ल के घोड़े दुर्लभ हैं।"

यह सोच कर कि दूर-दूर देशों की यात्रा करने को मिलेगी, अर्जुन उत्साह से भर गया। तभी उसके पिता ने चेतावनी देते हुए कहा, "पश्चिम दिशा में भूल से भी कदम मत रखना। अगर भूले-भटके भी उधर निकल गये तो धूर्तों के देश में जा पहुँचोगे। उनके चँगुल से बचकर आज तक कोई नहीं निकला। एक बार मैं भी भुगत चुका हूँ और आज तक पछता रहा हूँ।"

अर्जुन के बहुत कहने पर उसके पिता ने बताया, "तुम्हें शायद याद न हो। तुम छोटे-से थे और अपने भाई के साथ खेला करते थे। पन्द्रह बरस हुए व्यापार के सिलसिले में मुझे बाहर जाना पड़ा। तुम्हारे बड़े भाई को भी साथ लेता गया। तब वह चौदह साल का था। मैंने सोचा कि दूर देशों की यात्रा से और लोगों का रहन-सहन देखने से उसे अच्छी शिक्षा मिलेगी। लेकिन हमारा दुर्भाग्य! जब हम घर लौट रहे थे तो भूले से उस अनजान देश में चले गये। सांझ हो रही थी। इसलिए रात हमने एक सराय में बितायी। वहाँ के लोगों के आचार-विचार और बातचीत से ऐसा लगा कि हो न हो, उसी धूर्तों की नगरी में आ फँसे हैं जिसके कई किस्से मशहूर हैं। मैं इस चिन्ता में था कि कैसे, जितनी जल्दी हो सके, वहाँ से निकल भागा जाय।

अगले दिन तड़के जैसे ही सराय के मालिक को किराया चुका रहा था, उसका भाई दौड़ा-दौड़ा वहाँ आया। वह सिर पीट-पीट कर रो रहा था। उसकी पत्नी के मरा बच्चा हुआ था। इसके लिए वह मुझे दोषी ठहरा रहा था।

मेरे आश्चर्य का ठिकाना न था। धूर्त ने कहा, 'कल शाम जब तुम घोड़े से उतरे तो बहुत तेज-तेज साँस ले रहे थे। उस समय एक कीड़ा, जो सराय से उड़कर बाहर जा रहा था, तुम्हारी तेज़ साँस के झोंके से पलट कर सराय के उस कमरे में आ गया, जहाँ मेरी पत्नी थी। उसके बच्चा होनेवाला था। कीड़ा उसकी नाक में घुस गया और उसे जोर से छींक आ गयी। छींक आयी तो उसके पेट का बच्चा मर गया।'

"इससे पहले कि मैं इस विचित्र इल्ज़ाम का जवाब देता, वहाँ एक भीड़ जमा हो गयी। हर कोई उसी आदमी का पक्ष ले रहा था। मैं बिल्कुल

चकरा गया। देखते-ही-देखते वह तुम्हारे भाई को मुझसे छीन ले गये। बेचारा मेरा बेटा आज तक उनकी गुलामी कर रहा होगा।"

इन सब घटनाओं को सुनाते हुए बूढ़े की आँखों में आँसू भर आये। अपने पिता के दुख में उदास होकर अर्जुन ने कहा, "मैं प्रण करता हूँ, पिता जी, कि धूर्तों की नगरी के निकट मैं कभी नहीं जाऊँगा।"

इसके बाद अर्जुन दोनों घोड़े लेकर दूर दक्षिण के उस देश की ओर चल पड़ा।

कुछ दिनों बाद रास्ते में एक नदी मिली। नदी में बाढ़ आयी हुई थी। मल्लाहों ने अपनी छोटी नावों में घोड़ों को ले जाने से इन्कार कर दिया। साथ ही यह भी बताया कि अगर वह पश्चिम की ओर जाय तो उसे बड़ी और मजबूत नौका वाला एक मल्लाह मिलेगा जो घोड़ों समेत नदी पार करा सकेगा।

अर्जुन पश्चिम की ओर चल पड़ा। तभी बड़े जोर का तूफान आया। सिर छुपाने की कोई जगह ढूंढने के लिए उसने इधर-उधर देखा। तभी उसे

निकट की एक पहाड़ी के उस ओर धुआं उठता दिखायी दिया। अपने दोनों घोड़ों की लगाम को मजबूती से थामे, संभल-संभल कर कदम रखते हुए, वह पहाड़ी पर चढ़ गया

तूफान अभी-अभी थमा था। अर्जुन ने पहाड़ी से नीचे झाँका तो एक गाँव दिखायी दिया।

क्योंकि वह पश्चिम दिशा में काफी दूर निकल आया था, उसे लगा कि कहीं यह धूर्तों की नगरी तो नहीं है। उसने सोचा कि वापस लौट जाना चाहिए, लेकिन मन में कौतूहल भी था। भला इस देश में कैसे लोग रहते हैं जिनकी इतनी कहानियां हैं? पहाड़ी के किनारे से नीचे अच्छी तरह नज़र डालने के लिए जैसे ही वह झुका, उसका पांव फिसल गया और वह लुढ़कता

हुआ सीधा, सिर के बल, नीचे गाँव में जा गिरा। उसके घोड़े तेजी से उतर कर उसके पास आकर खड़े हो गये।

एक बूढ़ा, जो उधर से गुजर रहा था, दौड़ा-दौड़ा उसके पास आया। अर्जुन खड़ा हो गया। भाग्य से उसे कोई बड़ी चोट नहीं आयी थी। उसे यह देखकर खुशी हुई कि वह बूढ़ा उसकी ओर बड़े ध्यान से देख रहा है। उसने मन में सोचा, "धूर्तों के इस देश में भी ऐसे लोग हैं जो दूसरों का ख्याल करते

हैं ।" अर्जुन उसको धन्यवाद देने ही वाला था कि बूढ़े ने अचानक जोर-जोर से रोना-चिल्लाना शुरू कर दिया ।

बूढ़ा सिर पीट-पीट कर रो रहा था—"हाय मेरे प्यारे नन्हें मेंढक ! ओ मेरे बच्चे ! मैं तेरी मौत का बदला कैसे लूं !" अर्जुन को कुछ समझ में नहीं आया । कैसा मेंढक, कौन-सा मेढक ? उसका विलाप सुनकर गाँववाले इकट्ठे होने लगे । लोग अजीब-सी भाषा में बूढ़े से कुछ कह रहे थे । फिर अर्जुन की ओर मुड़कर उन्होंने समझाया, "बेचारे बूढ़े के कोई सन्तान नहीं है । एक मेंढक को ही इसने गोद ले रखा था । यह पालतू मेंढक अपनी पितृ-भक्ति के लिए मशहूर था । बूढ़ा भी उस पर जान देता था । इसमें शक नहीं कि पृथ्वी के सबसे अद्भुत मेढक के मर जाने से बूढ़े का दिल टूट गया है । अब दुनिया में उसका कोई नहीं ।"

जल्दी-ही गाँव के और भी लोग वहाँ इकट्ठे हो गये और लगे रोने-पीटने । अर्जुन की अक्ल काम नहीं कर रही थी । वह किसी तरह वहाँ से भाग निकलना चाहता था । उसने पूछा कि बूढ़े को कैसे शांत किया जाय ।

तभी एकदम बूढ़ा बोल उठा, "मुझे दोनों में से एक घोड़ा दे दो ।"

"मेंढक के बदले में एक घोड़ा ?" अर्जुन ने तुनक कर पूछा ।

बूढ़े ने कहा, "नौजवान ! मुझे तुम्हारी बात समझ में नहीं आयी । क्या एक घोड़ा बेटे से ज्यादा कीमती होता है ?"

अर्जुन ने वहुत वहस की, लेकिन वह अकेला क्या करता ? आखिरकार नौजवान व्यापारी को एक सुन्दर घोड़ा उस धूर्त के हवाले करना पड़ा ।

अर्जुन उस गाँव से निकला तो वहुत दुखी था । इस वार पहाड़ी पर चढ़ना उसके लिए दूभर था । वह थोड़ी दूर पैदल गया कि पहाड़ी के दूसरी ओर जाने का रास्ता दिख जाय ।

वह एक और गाँव में जा पहुँचा । वह वहुत भूखा था । सबसे पहले जो घर सामने आया उसी का द्वार जा खटखटाया। एक काने आदमी ने दरवाजा खोला। अर्जुन ने उससे कुछ खाने-पीने को माँगा । इस पर काना बोला, "खाने को मेरे पास कुछ नहीं, पीने को चाहो तो भर पेट पानी पिला सकता हूँ । और तुम्हें तो किसी तरह अपना पेट ही भरना है न ?"

अर्जुन ने पानी पिया और उसको धन्यवाद दिया । जैसे ही वह चलने लगा, काने ने उसके वाप का नाम पूछा । अर्जुन के वाप का नाम सुनते ही काने ने उसका वाजू पकड़ लिया। वोला, "तो आखिर तुम मुझे मिल ही गये। सुनो, नौजवान, बीस वरस हुए तुम्हारे देश में व्यापार के लिए गया था । दुर्भाग्य से मेरा सारा रुपया चोरी हो गया । मैं तुम्हारे वाप को अच्छी तरह से जानता था । मैंने उससे दो मोहरें उधार माँगी। उसने उधार देना मान तो लिया पर कोई जमानत माँगी। उस समय मेरे पास कुछ नहीं था। इस पर तुम्हारा वाप बोला कि और कुछ नहीं तो अपनी एक आँख गिरवी रखते जाओ । मुझे पैसे की सख्त जरूरत थी । मैंने उसे एक आँख निकाल कर दे दी। तुम्हारे वाप ने वायदा किया था कि एक साल वाद हमारे इस देश में आयेगा और मेरी आँख लौटा देगा । इस वात को बीस वरस हो गये । आज तुम मुझे मिले हो । लाओ, मेरी आँख लौटाओ । बेटे को वाप का ऋण चुकाना पड़ता है । तुम्हारे वाप से जो दो मुहरें ली थीं, लौटाने को तैयार हूँ । ब्याज में तीसरी मुहर भी दे दूंगा । लेकिन मेरी आँख लौटानी पड़ेगी ।"

देखते ही देखते काने के कई दोस्त जमा हो गये । अर्जुन रुआँसा हो कर बोला, "मुझे तुम्हारी आँख के वारे में कुछ मालूम नहीं। अव मुझे जो करना है सो वता दो और मुझे जाने दो ।"

"तुम जा सकते हो, लेकिन अपने घोड़े के बगैर," काने ने उत्तर दिया। अर्जुन को अपना घोड़ा छोड़ना पड़ा। बेचारे का हाल बुरा था। पहाड़ी से नीचे गिरने के कारण सारे शरीर में पीड़ा थी, दोनों कीमती घोड़े खोने के कारण उसका मन दुख से भरा था।

भूख से निढाल होने के कारण उससे चला भी नहीं जा रहा था। एक पेड़ के नीचे बैठकर वह रोने लगा।

तभी एक नवयुवक उधर से निकला। उसे देखकर पूछने लगा, "तुम कौन हो भाई ? रो क्यों रहे हो ?"

अर्जुन ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसे तो अब इस देश में किसी से बात करते हुए भी डर लगता था। लेकिन नौजवान आसानी से टलने वाला नहीं था। देखने में दयालु भी लगता था।

अर्जुन ने सारा किस्सा कह सुनाया कि कैसे उसके दोनों घोड़े छीन लिये गये। नवयुवक थोड़ी देर चुप रहा, फिर बोला, "चलो राजा के पास चलें," उसने कहा, "तुम्हारे घोड़े मैं तुम्हें दिलवा के रहूँगा।"

अर्जुन पहले तो हिचकिचाया, मगर उसके पास था ही क्या जिसे खोने का डर होता। वह उसके साथ राज दरबार की ओर चल दिया। रास्ते में वह अर्जुन को समझाता गया कि राजा से क्या कहना है।

अर्जुन की फरियाद सुनकर राजा ने बूढ़े और काने को बुलवाया। जाँच शुरू हुई।

बूढ़े ने बताया कि किस तरह उसने मेंढक को गोद लिया था और वह अर्जुन के शरीर के नीचे दब कर मर गया था। बूढ़े का बयान खत्म हो गया तो अर्जुन ने एक जीवित मेंढक अपनी पगड़ी में से निकाला। राजा से उसने कहा, "महाराज! मैंने इस मेंढक को गोद लिया है। अब मैं इसे पहाड़ी के नीचे रख आता हूँ। बूढ़े से कहा जाय कि वह भी चोटी पर से उसी तरह लुढ़के जैसे मैं लुढ़का था और मेरे मेंढक-पुत्र पर गिर कर उसे मार डाले।"

राजा राज़ी हो गया। बोला, "बात जँचती है। बहुत अच्छा सुझाव है। बूढ़े की समस्या का यही एक हल है।"

भला बूढ़ा इसके लिए क्यों तैयार होता? बिना एक शब्द कहे, अर्जुन को उसने घोड़ा लौटा दिया और जान बचाकर खिसक गया!

अब काने के मुकदमे की बारी थी। अपनी सफाई पेश करते हुए अर्जुन ने कहा, "इसमें कोई सन्देह नहीं महाराज कि मेरे पिता के बड़े विचित्र मन-बहलाव थे। इनमें से एक शौक लोगों की आँखें जमा करने का भी था। हमारे गोदाम में ऐसी सैंकड़ों आँखें रखी हैं। मैं इस आदमी की आँख लौटाने को तैयार हूँ पर मेरे लिए आँखों के ढेर में से इसकी आँख को ढूंढ निकालना मुश्किल काम है। कैसे पहचानूंगा भला? मैं यह तभी कर सकता हूँ अगर मैं इसकी दूसरी आँख भी निकाल कर ले जाऊँ, और गोदाम में इसके जोड़ की दूसरी आँख छाँट कर निकालूं। आज्ञा हो तो मैं इसकी यह आँख भी काटकर निकाल लूं।"

"वाह! कितना बढ़िया सुझाव है," राजा ने प्रशंसा करत हुए कहा। काना भला अपनी बची-खुची एक आँख देने को कैसे तैयार होता? बिना

कोई हील हवाला किये अर्जुन का घोड़ा उसने लौटा दिया ।

इसके बाद उस नवयुवक ने अर्जुन से कहा, "आओ, मैं तुम्हें इस देश की सरहद तक छोड़ आऊं ताकि तुम्हें किसी और मुसीबत का सामना न करना पड़े ।"

चलते-चलते, बातों ही बातों में, अर्जुन को पता चल गया कि वह नवयुवक और कोई नहीं, उसका खोया हुआ भाई ही है। जिस धूर्त मालिक और मालकिन ने उसे दास बना कर रखा था, वे अभी हाल ही में मर गये थे। तभी से वह अपने देश लौटने का मौका ढूंढ रहा था। धूर्तों के बीच इतने वर्ष रहकर वह जान गया था कि उनसे कैसे निक[redacted]ना चाहिए ।

अब दोनों भाई धूर्त नगरी से बाहर निकल आये । दोनों दक्षिण की ओर गये । अपने घोड़ों को ऊंचे दामों पर बेचा और घर लौट गये । दोनों बेटों को पाकर बाप निहाल हो गया ।

1. राजा की स्वर्ग-यात्रा

एक था राजा—खूब मोटा। जितना मोटा, उतनी ही मोटी उसकी बुद्धि।

उस राजा का एक मंत्री था—खूब दुबला-पतला, जितना दुबला-पतला उतना ही चलता-पुर्जा। चापलूस ऐसा कि राजा को उसने मुट्ठी में कर रखा था। राजा समझता कि जब तक मेरा यह मंत्री मेरे साथ है, मुझे किसी तरह की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।

राजा प्रायः अपने मंत्री से कहा करता, "वायदा करो कि तुम मुझे छोड़ कर नहीं जाओगे।" और मंत्री हमेशा यही कहता, "ऐसा कैसे हो सकता है, अन्नदाता ? मैं आपको सलाह देने के लिए, आपकी समस्याओं को सुलझाने के लिए, सदा आप के साथ रहूँगा। आप यहाँ रहें, चाहे स्वर्ग में, चाहे नरक में।" उसकी इन बातों से राजा गद्गद् हो जाता। एक दिन सन्ध्या को नदी-तट से घूम कर राजा महल को लौट रहा था कि उसे पास के वन से गीदड़ों के चिल्लाने की आवाज सुनायी दी। राजा को अचम्भा हुआ। उसने जानना चाहा कि गीदड़ चिल्ला क्यों रहे हैं ?

उसने मंत्री से पूछा, "इतने सारे गीदड़ एक साथ क्यों चिल्ला रहे हैं?"

मंत्री ने उत्तर दिया, "अन्नदाता! आप जानते ही हैं कि इस वर्ष शीत का प्रकोप अधिक रहा है। बेचारे गीदड़ों के पास कोई ऊनी वस्त्र तो है नहीं। वे आप से कम्बल माँग रहे हैं।"

"ओह यह बात है! धन्यवाद! जो गीदड़ों की बात समझे वह सचमुच ही बहुत होशियार मंत्री है। लेकिन इन गीदड़ों के पास कम्बल हैं क्यों नहीं?"

"इसमें रसद-विभाग के अधिकारी का दोष है," और मंत्री ने उस अधिकारी का नाम लिया जो उसे एक आँख न भाता था।

"रसद-अधिकारी की यह मजाल कि वह हमारे वन के गीदड़ों को कम्बल न दे? इसका मतलब यह है कि वह अपना काम ठीक से नहीं करता। वह खराब आदमी है। उस अधिकारी को एक कम्बल में लपेट कर समुद्र में फेंक दो और सौ कम्बल खरीदकर हमारे गीदड़ मित्रों को बांट दो," राजा ने आज्ञा दी।

"जो आज्ञा," कहकर मंत्री चल दिया, मानो राजा की आज्ञा का पालन करने की जल्दी में हो। लेकिन उसने आज्ञा के पहले भाग का ही पालन किया यानी रसद-अधिकारी को मरवा डाला। रसद-अधिकारी को मौत के घाट उतार चुकने के बाद, मंत्री ने सौ कम्बल खरीदने के लिए राज्य-कोष से धन तो ले लिया मगर खरीदा कुछ नहीं।

अगली शाम को राजा ने फिर गीदड़ों के चिल्लाने की आवाज़ सुनी । उसने आश्चर्य से मंत्री की ओर देखा और पूछा, "क्या बात है ? अब गीदड़ किस लिए चिल्ला रहे हैं ?"

"इसका बिल्कुल दूसरा कारण है, अन्नदाता ! वे अपनी भाषा में आप को धन्यवाद दे रहे हैं ।" मंत्री ने मुस्कराकर कहा ।

"वाह वाह ! तुम्हारा जवाब नहीं," राजा ने कहा, "मुझे यह कभी सूझ ही नहीं सकता था । मुझे पूरा विश्वास है कि किसी राजा का मेरे जैसा मंत्री नहीं । तुम मेरे साथ होते हो तो मानो सारे संसार का ज्ञान मेरी मुट्ठी में होता है । वायदा करो कि तुम मुझे छोड़ कर कभी नहीं जाओगे ।"

"कभी नहीं मेरे स्वामी !" मंत्री ने आश्वासन दिया, "स्वर्ग हो अथवा नरक, मैं सदा आपके साथ रहूँगा ।"

राजा बहुत प्रसन्न हुआ, लेकिन उसकी प्रसन्नता देर तक नहीं टिकी । अचानक एक जंगली सूअर भागता हुआ उधर से निकला । बेचारा राजा, जिसने शिकार के लिए जंगल में कभी पाँव नहीं धरा था, क्या जाने कि जंगली सूअर होता कैसा है ।

हैरान होकर उसने मंत्री से पूछा, "यह कौन-सा जीव है ?" मंत्री ने कई बार जंगली सूअर देखे थे। बस फिर क्या था ! जैसा वह करता आया था, इस बार भी उसने राजा के अज्ञान से लाभ उठाना चाहा। उसने कहा, "यह आपका हाथी है सरकार ! इसकी ऐसी खराब दशा इसलिए हो गयी क्योंकि हाथियों का अधिकारी इसे ठीक से खाना नहीं देता।"

यह सुनकर राजा क्रोध से उबलने लगा। तुरन्त उस अधिकारी को प्राणदंड देने का आदेश निकाला गया, और फिर राजा ने मंत्री से कहा, "जितने धन की ज़रूरत हो राज्य-कोष से ले लो, और इस हाथी को खूब खिला-पिला कर तगड़ा बना दो।"

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि मंत्री ने खजाने में से खूब सारा रुपया निकलवाकर अपनी जेब भरी।

एक महीना बीत गया। एक शाम ऐसा हुआ कि राजा जब घूम कर लौट रहा था तो वह सूअर फिर उधर आ निकला। राजा ने हैरान होकर मंत्री से पूछा, "क्या यह वही भूखा हाथी नहीं है जिसको हमने उस दिन देखा था ? क्या बात है कि यह अभी तक मोटा नहीं हुआ ?" मंत्री ने

खीसें निपोर, अपनी बत्तीसी दिखाते हुए कहा, "नहीं अन्नदाता, उस हाथी का तो आपकी दया से अब वैसा ही स्वास्थ्य है जैसा कि आपका। बिल्कुल ऐसा-ही गोल-मटोल। यह जीव तो एक चूहा है जो आपके रसोई-घर का माल उड़ा-उड़ा कर इतना मोटा हो गया है। इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि महल का प्रधान रसोइया कितना लापरवाह है," मंत्री ने राजा के कान भरे।

इतना सुनना था कि राजा का गोल-मटोल चेहरा क्रोध से लाल हो गया। उसने आँखें तरेर कर कहा, "कितने अफसोस की बात है, जो उत्तम स्वास्थ्य मेरा होना चाहिए था वह इस चूहे का है, और यह सब रसोइए की लापरवाही की वजह से।" तभी उसने आदेश दिया कि रसोइया महाराज का खाना पका चुके तो उसे फाँसी पर लटका दिया जाय।

उसी शाम को रसोइया गुप्त रूप से मंत्री से मिला और उसे ढेर सारा रुपया दिया। उसने यह भी वायदा किया कि राजा के लिए वह जो माल बनायेगा उसमें से मंत्री को भी खाने के लिए दिया करेगा।

मंत्री बहुत प्रसन्न था। उसने रसोइए को विश्वास दिलाया कि वह उसका बाल भी बाँका नहीं होने देगा। आधी रात को राजा के सामने रसोइए को फाँसी पर चढ़ाया ही जा रहा था कि मंत्री चीखता हुआ वहाँ आ पहुँचा। "रुको! रुको!" वह चिल्ला रहा था।

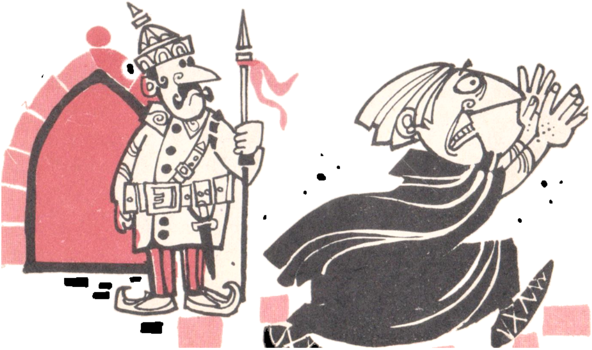

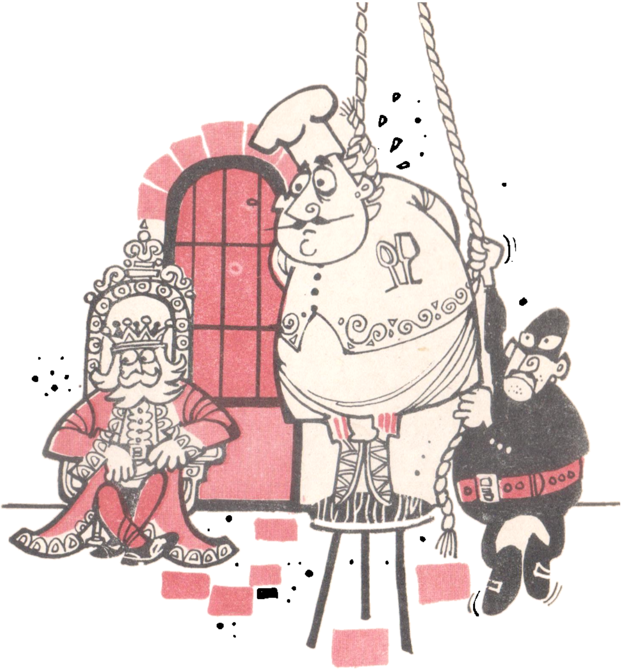

और फिर राजा की ओर मुड़कर उसने कहा, "सरकार ! मैं अभी पंचांग देख कर आ रहा हूँ। यह रात्रि बड़ी शुभ सायत लेकर आयी है । इस समय जिसे फाँसी दी जायेगी वह सीधा स्वर्ग-धाम सिधारेगा । अन्नदाता ! इस शुभ घड़ी में रसोइए को फाँसी देना उसे दण्ड नहीं, इनाम देने के बराबर है। हम ऐसे अपराधी को स्वर्ग में क्यों भेजें, जिसने आप की जगह एक चूहे को खिला-खिला कर मोटा किया है ।"

मंत्री का विश्वास था कि अगर इस समय किसी तरह फाँसी टल जाय तो बाद में राजा भूल-भाल जायगा और रसोइया बच जायगा।

लेकिन राजा तो खुशी से उछल पड़ा। "बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। मुझे बहुत दिनों से स्वर्ग देखने की लालसा थी।" और फिर उसने जल्लाद को आदेश दिया, "फंदा मेरे गले में डाल दो और जल्दी से मुझे फाँसी दे दो।"

लेकिन फंदे की तरफ बढ़ते हुए वह अचानक रुक गया और बोला, "मेरे प्यारे मंत्री, तुमने मुझसे वायदा किया था कि तुम मुझे कभी नहीं छोड़ोगे– स्वर्ग में भी, नरक में भी। तुम्हारे बिना मेरा काम नहीं चलेगा। अब चलो, मुझे स्वर्ग का रास्ता दिखाओ।"

राजा ने जल्लाद को आदेश दिया कि पहले मंत्री को फाँसी लगायी जाय। डर के मारे मंत्री का चेहरा पीला पड़ गया। जल्लाद ने आगे बढ़कर मंत्री को पकड़ा और फंदा उसकी गर्दन में डाल दिया। राजा बहुत खुश था कि उसकी आज्ञा का पालन इतनी फुर्ती से किया जा रहा है। मंत्री को फाँसी लगाने के बाद, जल्लादों ने राजा को पकड़ कर उसको भी फाँसी पर चढ़ा दिया। इस प्रकार मूर्ख राजा और धूर्त मंत्री दोनों से प्रजा का छुटकारा हो गया।

5. अनोखा वरदान

एक बार एक तूफ़ानी रात में घोड़े पर सवार एक राजा एक तंग-से रास्ते से जा रहा था। वह भेस बदले हुए था। मामूली कपड़े पहनकर, साधारण जनता के बीच जाकर उनके हाल-चाल का पता लगाना उसका दस्तूर था।

वर्षा में वह बिल्कुल भीग चुका था, पर उसे इसकी चिन्ता नहीं थी। सर्दी को सह लेने का उसमें दम था। अंधेरे की भी उसे परवाह नहीं थी। इसलिए धीमे-धीमे, लेकिन सावधानी से चला जा रहा था।

उसके घोड़े का पीछा करते हुए डाकू भी चुपके-चुपके चले जा रहे थे। डाकू राजा के शानदार घोड़े पर हाथ साफ करना चाहते थे।

अचानक डाकुओं ने राजा को घेर लिया। राजा एक बार तो सकते में आ गया, मगर वह घबराया नहीं। वह बच निकलने की तरकीब सोच रहा था कि उसके घोड़े का खुर सड़क के गड्ढे में फंस गया। डाकू, जो गिनती में दर्जन से अधिक थे, राजा पर लपकने ही वाले थे कि एक ओर से छः नौजवान

वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि राजा मुसीबत में है। उन्होंने डाकुओं पर हमला किया। पीछे से अचानक हमला हुआ तो डाकुओं का ध्यान बँट गया, और इस प्रकार राजा बच निकला।

राजा जहाँ भी भेस बदल कर जाता था, उसके पीछे-पीछे, कुछ दूरी पर, उसके कुछ चुने हुए अंगरक्षक भी रहते थे। तब तक अंगरक्षकों का दल भी वहाँ पहुँच गया। सारे-के-सारे डाकू घेर लिये गये। एक भी बच कर न भाग सका। राजा उन नवयुवकों से प्रसन्न था, जिन्होंने बिना यह जाने कि वह एक राजा है, डाकुओं से उसकी रक्षा की थी। राजा ने उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और कहा कि वे उसके साथ महल तक चलें।

वे नवयुवक दूर-दूर के गांवों से आकर एक सराय में ठहरे थे और वहीं उनकी मित्रता हुई थी।

भोर होते तक रात की घटना का समाचार सब जगह फैल गया। सारी प्रजा खुश थी कि डाकू उनके राजा का बाल बाँका नहीं कर सके। राज्य-परिवार के लोगों, मंत्रियों, दरबारियों और सारी जनता ने नवयुवकों के साहस की प्रशंसा की।

अगले दिन दरबार में इन छहों नौजवानों को राजा के सामने लाया गया। राजा ने अपने सिंहासन से उतर कर उन्हें गले से लगाया और मन-चाहा पुरस्कार माँगने को कहा, "आप बारी-बारी से जो चाहें माँगें। अगर मेरे बस से बाहर न हुआ तो मैं इसी समय आपकी कोई भी इच्छा पूरी करूँगा," राजा ने कहा।

उन छहों में से जो सबसे बड़ा था, राजा ने पहले उसी से पूछा। एक पल के लिए उसने सोचा और फिर कहा, "महाराज, बहुत दिनों से मेरी लालसा थी कि मेरे पास आराम से रहने के लिए एक घर हो। मुझे बस एक अच्छा-सा मकान चाहिए।"

राजा ने उसी समय उस नौजवान के लिए एक आलीशान भवन बनाने की आज्ञा दे दी।

अब दूसरे नौजवान की बारी थी। वह अपने पद में तरक्की चाहता

था। उसको राजा ने राज्य दरबारी नियुक्त कर दिया और इस तरह उसकी इच्छा पूरी की।

तीसरे नवयुवक ने कहा, "सरकार! मेरे गाँव के लोग हर सप्ताह नगर में सब्जी-तरकारी बेचने आते हैं। गाँव और शहर के बीच कोई अच्छी सड़क

नहीं, इसलिए उन्हें बड़ा कष्ट होता है, खासकर बरसात में। मेरी विनती है कि एक अच्छी सड़क बनवा दी जाय ताकि उनका कष्ट दूर हो।"

राजा ने उसी समय सड़क और पुलों का निर्माण करानेवाले मंत्री को हुक्म दिया कि फौरन सड़क बनाने का काम शुरू कर दिया जाय।

जब चौथे नौजवान से उसकी इच्छा पूछी गयी तो वह शरमाते हुए बोला, "महाराज, आप मेरे पिता समान हैं। मैं एक सुन्दर पत्नी चाहता हूँ।"

राजा के विदूषक की एक सुन्दर कन्या थी। राजा ने विदूषक से पूछा। उसने सहर्ष उस नौजवान को दामाद बनाना स्वीकार कर लिया।

पांचवें नौजवान ने धन माँगा। उसी समय बोरों में सोना भर कर उसे दे दिया गया।

अब छठे की बारी थी। उसने कहा, "महाराज! मेरी बस यही इच्छा है कि जब तक मैं या आप जीवित रहें, वर्ष में एक दिन आप मेरे यहाँ अतिथि बन कर आयें।" इस अनोखी इच्छा को सुनकर सब हैरान रह गये। बहुत से लोगों ने तो नौजवान को मूर्ख समझा। स्वयं राजा को भी यह बड़ी अजीब-सी बात लगी कि नौजवान अपने लिए कुछ माँगने के बजाय उसी को अतिथि बनाना चाहता है। लेकिन उसने तो शुरू में ही कह दिया था कि जब तक उसके वश में होगा, वह उनकी इच्छा पूरी करेगा। बस फिर क्या था! वर्ष में एक दिन और एक रात उसने उस नवयुवक का अतिथि बनना स्वीकार कर लिया।

अब राज्य-सरकार के विभिन्न विभागों की जिम्मेदारी हो गयी कि राजा जब नौजवान के घर जायें तो उनके दौरे का ठीक-ठीक प्रबन्ध हो। न राजा को किसी प्रकार का कष्ट हो और न उनके सेवकों और घोड़ों को। बढ़िया

सड़क बनाना जरूरी था ताकि राजा का रथ आसानी से जा सके। फिर यह प्रश्न उठा कि राजा एक छोटे-से मकान में दिन और रात कैसे काटेंगे ? कहाँ उठे-बैठेंगे ? कहाँ खाये-पियेंगे ? कहाँ सोयेंगे ? इसलिए राजसी ठाठ-बाट के लायक एक महल खड़ा करवाया गया। लेकिन नौजवान अपनी मामूली-सी आमदनी में इतने बड़े महल की देखरेख का खर्च कैसे चलायेगा ? कैसे राजा और उसके संगी-साथियों की देखभाल करेगा ? इसके लिए उसे बहुत सारा धन दिया गया। सरकारी खर्च पर नौकर-चाकर भी ।

पुरानी चली आनेवाली प्रथा के अनुसार, राजा किसी राज–दरबारी का ही अतिथि बन सकता था। इसलिए उस नवयुवक को राज–दरबारी की पदवी भी देनी पड़ी। अब तो उसका उतना ही सम्मान होने लगा जितना किसी राजकुमार का होता।

अभी एक और बात बाकी थी। जिस घर में राजा अतिथि बन कर ठहरेगा, उसकी गृहिणी को राजा के नाजुक मिज़ाज और पसंद का पता होना चाहिए। इस बात की जानकारी राजकुमारी से अधिक और किसे हो सकती थी ? शीघ्र ही नवयुवक से राजकुमारी के विवाह की तैयारियां की जाने लगीं।

इस तरह केवल एक वरदान माँग कर उस चतुर नौजवान ने वह सब कुछ एक साथ पा लिया जो पाँचों ने अलग-अलग माँगा था।

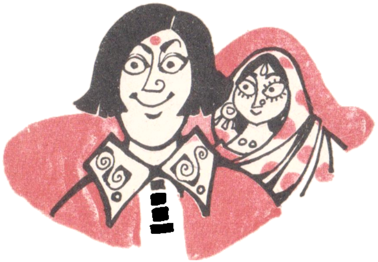

6. जैसे को तैसा

एक समय की वात है कि एक बूढ़ा किसी गाँव में मे चला जा रहा था। अचानक उसके कानों में किसी के गाने की आवाज़ पड़ी। आवाज एक झोपड़ी में से आ रही थी। गीत की धुन वड़ी मीठी और प्यारी थी। बूढ़ा काफी देर खड़ा-खड़ा सुनता रहा। फिर उसने झोंपड़ी के भीतर झांक कर देखा। एक छोटी-सी लड़की गा रही थी। बूढ़े ने प्यार से उसकी पीठ थपथपायी और उसे सोने की एक मुहर दी।

लड़की का वाप, मोहन, पास ही खड़ा था। उसकी बाँछें खिल गयीं। उसे स्वप्न में भी ऐसी आशा नहीं थी। उसने झट लड़की से मुहर छीन ली। उधर जैसे ही बूढ़ा वापस जाने के लिए मुड़ा, मोहन ने चिल्ला कर कहा, "अरे ठहरो, जाते कहाँ हो? वकाया तो चुकाते जाओ।"

बूढ़े ने मोहन की ओर वड़ी हैरानी से देखा। मोहन बोला, "देखो, वावा। मेरी वच्ची के गाने का मज़ा लेने का मोल वस एक सोने की मुहर नहीं। इसकी दस मुहरें लगती हैं। नौ मुहरें और निकालो।"

बूढ़े को यह समझते देर न लगी कि हो न हो, यह आदमी धूर्त है । पर भोले बनते हुए उसने कहा, "गाने में कोयल को भी मात देनेवाली लड़की के भाग्यशाली पिता ! मुझे अफ़सोस है कि इस समय मेरे पास और मुहरें नहीं हैं ।"

"कोई बात नहीं । मुहरें नहीं हैं तो अपनी टोपी और सोने की जंजीर देते जाओ," मोहन ने कहा ।

बूढ़े ने कहा, "हाँ, हाँ ! टोपी तुम्हारे सिर पर होनी ही चाहिए जिसमें इतना तेज़ दिमाग है, और गले में जंजीर भी । लेकिन मेरे भाई, मेरी यह टोपी और जंजीर बड़ी घिसी-पिटी है । तुम मेरे साथ मेरे घर चलो । मैं तुम्हें टकसाल से अभी-अभी निकली, नयी और खरी सोने की सौ मुहरें दूंगा । और हाँ, जो मुहर मैंने अभी दी है वह भी पुरानी है, थोड़ा खोट भी है उसमें । तुम उसे भी लौटा दो और चलो मेरे साथ ।"

"एक सौ मुहरें ! तुम सचमुच कोई भले आदमी हो । मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ । कितनी दूर है तुम्हारा घर ? हजार कोस हो तो भी मैं सौ मुहरों के लिए वहाँ तक चल सकता हूँ," मोहन खुशी से पागल हो रहा था ।

"अरे भाई, हजार कोस की नौबत नहीं आयेगी । बस, तीन कोस ही चलना होगा," बूढ़े ने जवाब दिया ।

मोहन ने बूढ़े को वह सोने की मुहर लौटा दी और फिर वह उसके पीछे-पीछे चलने लगा । मोहन चला जा रहा था । उसके मन में खुशी के लड्डू फूट रहे थे । एकदम उसके मुंह से निकला, "बाबा, जानते हो सौ मुहरों से मैं क्या करूँगा ?"

"नहीं तो," बूढ़े ने उत्तर दिया ।

"मैं एक महल खड़ा करूंगा । ऐसा शानदार जिसके सामने राजा का महल भी पानी भरे !"

"अच्छा ! यह बात है ?"

"और मैं राजा से कहूँगा कि वह अपनी बेटी मुझसे ब्याह दे ।"

"लेकिन तुम्हारा तो ब्याह हो चुका है, एक बच्ची भी है तुम्हारी।"

"तो क्या हुआ? मैं एक और ब्याह कर लूंगा। लेकिन इस बार तो किसी राजकुमारी को ही वरूंगा।"

"वाह भाई, वाह!"

चलते-चलते वे नगर में राजा के महल के पास पहुँच गये थे। बूढ़े को महल के सिंह-द्वार की ओर जाते देख मोहन ने पूछा, "तुम उधर क्यों जा रहे हो ? यह तो राजा का महल है।"

"हाँ, हाँ, यह मेरा ही घर है," बूढ़े ने कहा।

मोहन ने चौंक कर ध्यान से बूढ़े की ओर देखा। वह एकदम पहचान गया। बूढ़ा और कोई नहीं, नगरी का राजा ही था। भेस बदला होने के कारण वह पहले नहीं पहचान सका था।

मोहन के काटो तो लहू नहीं। उसके मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे। यह देखकर राजा ने नम्रता से कहा, "गाने में कोयल को भी मात देनेवाली लड़की के पिता, तेरी बेटी के गाने से मुझे दो पल के लिए आनन्द आया। इसके बदले में, सौ मुहरों का वायदा करके क्या मैंने तुम्हें पूरा घड़ी भर का आनन्द नहीं दिया ? तुम्हारी बेटी के मीठे कंठ-स्वर ने मुझको खुश किया और मेरी मीठी बात ने तुमको। खुशी के बाद तुम्हारे लालच से मुझको निराशा हुई। और यह उचित ही है कि तुम्हें भी खुशी के बाद निराशा मिले। अब जाओ, निकल जाओ यहाँ से।"

अपना-सा मुँह लेकर मोहन को वापस लौटना पड़ा। चले थे छब्बे बनने, दुबे भी न रहे !

7. सब से अच्छा वर

सरयू के तट पर एक तपस्वी और उसकी पत्नी रहते थे। छोटी-सी उनकी एक कुटिया थी। आसपास के गाँव वाले जो अन्न-वस्त्र दे जाते, उसी पर उनका निर्वाह होता था।

उनके कोई सन्तान नहीं थी । तपस्वी की पत्नी किसी बच्चे को गोद लेना चाहती थी । बेचारा तपस्वी गाँव-गाँव, घर-घर मारा फिरा पर कोई भी उन्हें बच्चा देने को तैयार नहीं हुआ । भला तपस्वी को कौन अपना बच्चा देता ।

तपस्वी के पास धन नहीं था । पर इसका यह अर्थ नहीं कि उसके पास कोई चमत्कार नहीं था । एक दिन वह अपनी कुटिया के बाहर बैठा था कि एक उड़ते हुए कौवे की चोंच से एक चुहिया नीचे आ गिरी । तपस्वी की पत्नी ने उस चुहिया को उठा लिया और बड़ी देर तक उसे सहलाती रही । चुहिया को मानो जीवन-दान मिल गया ।

थोड़ी देर के बाद, पत्नी ने तपस्वी से कहा, "जब कोई भी अपना बच्चा हमें गोद लेने के लिए नहीं देता, तो आप अपनी शक्ति से इस चुहिया को ही लड़की क्यों नहीं बना देते ?"

यह सुनकर तपस्वी मुस्कराये और बोले, "तुम जिससे प्रसन्न हो, मैं वही करने को तैयार हूँ।"

तब तपस्वी ने कोई मंत्र फूंका और अपने कमंडल से पवित्र जल लेकर उस चुहिया पर छिड़का। देखते ही देखते, चुहिया एक सुन्दर लड़की बन गयी।

तपस्वी की पत्नी फूली नहीं समायी। उसने बच्ची को गले लगा लिया और उसके पास जो भी अच्छे से अच्छा भोजन था, उसे खिलाने लगी। बड़े दुलार से उसे पाला-पोसा जाने लगा। प्यार से वे दोनों उस कन्या को चुहियाबाला कहते थे।

समय बीतता गया। कन्या बड़ी होती गयी। तपस्वी और उसकी पत्नी उसे प्रसन्न रखने का हर प्रयत्न करते। उन्होंने उसे खूब लिखाया-पढ़ाया भी। साहित्य, गणित, नृत्य, संगीत, क्या था जो उसे नहीं सिखाया गया।

धीरे-धीरे चुहियाबाला की आयु विवाह के योग्य हुई। अब तपस्वी को उसके लिए योग्य वर की चिन्ता हुई।

तपस्वी की पत्नी ने कहा, "आप के पास अलौकिक शक्ति है। आपने एक छोटी-सी चुहिया को कन्या बना दिया। अब आप अपने चमत्कार से इसके लिए योग्य वर भी ढूंढ निकालें।"

"हाँ, हाँ अवश्य। मैं सूर्य से भी विनती करूं तो वह भी हमारी बेटी से विवाह कर लेगा," तपस्वी बोला।

"क्या सच ?" उसकी पत्नी ने खुश होकर पूछा, "यदि आप इतने शक्तिशाली हैं तो मैं सूर्य को ही अपना दामाद बनाऊंगी। अब आपने जो कहा है वह करके दिखाइए।"

"बहुत अच्छा," तपस्वी ने उत्तर दिया। उसने अपने नेत्र मूंदे और ध्यान करने लगा। अचानक सूर्य उनके सामने आ खड़ा हुआ।

तपस्वी ने विनती की कि वह उसकी कन्या से विवाह कर ले।

सूर्य ने कहा, "मुझे आपकी पुत्री से विवाह करने में कोई आपत्ति नहीं, किन्तु क्या आपको विश्वास है कि वह मुझे पसन्द करेगी ?"

तपस्वी ने अपनी पुत्री को बुलवाया और उससे पूछा । वह बोली, "पिता जी, आपने मेरे लिए जो वर ढूँढा है वह अच्छा तो है लेकिन यह ज़रूरत से ज्यादा तेज और चमकदार है ! क्या इससे अच्छा और कोई नहीं ?"

सूर्य से श्रेष्ठ और महान कौन हो सकता है ? तपस्वी यह सोच नहीं पा रहा था । उसे इस प्रकार विचारों में डूबा हुआ देखकर, सूर्य ने कहा "आप मुझसे पूछें तो मेरे विचार में बादल मुझ से श्रेष्ठ है । वह मेरी चमक-दमक को ढक लेता है, और कई बार मुझे पृथ्वी से ओझल कर देता है ।"

यह कह कर सूर्य ने विदा ली । और तब वहाँ बादल आया । तपस्वी ने बादल से तो यह नहीं पूछा कि वह उनकी पुत्री से विवाह करने को तैयार है या नहीं, मगर हाँ, चुहियावाला से जरूर पूछा कि उसको बादल पसन्द है या नहीं ।

चुहियावाला ने एक क्षण के लिए बादल को ध्यान से देखा और कहा, "पिता जी, वैसे तो यह अच्छा है, मगर बहुत काला है । क्या इससे श्रेष्ठ वर और कोई नहीं ?"

बादल ने कहा, "पवन को मुझसे ज्यादा बलवान समझा जा सकता है, क्योंकि प्रायः वह मुझे आकाश में एक छोर से दूसरे छोर तक धकेलता फिरता है ।"

बादल ने विदा ली तो पवन आया । चुहियावाला ने उसकी ओर निहारा और कहा, "पिता जी ! यह युवक बड़ा चंचल मालूम होता है । एक जगह तो टिकता ही नहीं । क्या इससे श्रेष्ठ और कोई नहीं ?"

तपस्वी ने चिन्तापूर्वक इधर-उधर देखा । तब पवन बोला, "आप चिन्ता न करें । पर्वत मुझ से निश्चय ही श्रेष्ठ और ज्यादा बलवान है । मैं इतना शक्तिशाली होते हुए भी उसे टस से मस नहीं कर सकता । मेरा विचार है कि आप की पुत्री को वह पसन्द आ जायेगा ।"

जैसे ही पवन विदा हुआ, पर्वत आ खड़ा हुआ ।

उस को देखते ही चुहियावाला बोली, "पिता जी ! यह तो बड़ा सुस्त और बोदा-सा दिखायी देता है ? क्या इससे श्रेष्ठ और कोई नहीं ?"

यह सुनते ही पर्वत ने उत्तर दिया, "है क्यों नहीं ? अवश्य है । चूहे के बारे में आपका क्या विचार है ? वही एक जीव है जो मुझमें छेद करने का साहस रखता है । वही आपकी कन्या के लिए योग्य वर सिद्ध होगा ।"

जैसे ही पर्वत ने प्रस्थान किया, चूहा विराजमान हुआ ।

चुहियावाला ने उसे देखा तो फूली न समायी । "इसको छोड़ मैं और किसी से विवाह नहीं करूँगी । आप अब और परेशान न हों । यह सब से बाँका और योग्य है," चुहिया ने खुश होकर कहा ।

फिर क्या था । चुहियावाला का विवाह चूहे से कर दिया गया और वह अपने माता-पिता का घर छोड़ अपने पति के घर रहने के लिए चल दी ।

तपस्वी की पत्नी ने लम्बी साँस ली । बोली, –"वाह, खूब । बेटा बगल में, ढिंढोरा नगर में ! हम तो बिटिया रानी के लिए सूरज-चाँद ढूंढ रहे थे और उसने पसन्द किया एक चूहे को । अच्छा मज़ाक रहा !"

8. भाग्य से लड़नेवाला राजकुमार

दूर घने जंगल में एक लड़का और उसकी माँ रहा करते थे। लड़के का नाम था कुमार! अपनी कुटिया से दूर-दूर तक उसे कोई घर दिखायी न देता था। दिखती थीं तो बस पेड़ों की कतारें। कहीं चीड़, कहीं देवदार! कहीं कोई पेड़, कहीं कोई और। उसे सुनाई देता तो बस बहते पानी का कलकल स्वर, जंगली जानवरों की आवाजें और चिड़ियों का चहचहाना!

जब कुमार इतना बड़ा हो गया कि कोई काम कर सके तो वह हर शाम जगह-जगह कुछ जाल बिछा देता। यह उसका रोज़ का नियम बन गया। सवेरे जब वहाँ जा कर देखता तो एक कस्तूरी-मृग जाल में फंसा हुआ पाता।

दो-तीन दिन बाद उधर से कोई व्यापारी गुजरता। कस्तूरी-मृग के बदले उसे वह कुछ कपड़े-लत्ते और खाने-पीने को दे जाता। कभी-कभी भोज-पत्रों की कोई पुस्तक भी पढ़ने के लिए दे जाता। कभी-कभी दूर के गाँवों के

छोकरे भी जंगली फल-फूल और मोर-पंख चुनने आते। उन लड़कों को कुमार बड़ा अच्छा लगता था। एक दिन उन्होंने कहा, "कुमार, हम चाहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हर रोज खेलें। लेकिन हर रोज तो हम यहाँ आ नहीं सकते। हमारा गाँव बड़ी दूर है और यहाँ का रास्ता भी बड़ा बीहड़ है। तुम हमारे साथ चलकर हमारे गाँव में क्यों नहीं रहते ? यहाँ इतनी दूर अकेले रहने में क्या मजा है ?"

जब लड़के चले गये तो कुमार दौड़ता हुआ माँ के पास गया। बोला, "माँ, हम अकेले इस बीहड़ वन में क्यों रहते हैं ? मेरे सारे मित्र तो गाँव में मिलकर रहते हैं। हम भी वहाँ जाकर उनके साथ रहेंगे।"

माँ ने कोई जवाब नहीं दिया। कुमार ने फिर पूछा। माँ ने कहा, "हमें सदा यहीं रहना होगा। इसी जंगल में। दूसरे लोगों के साथ जाकर रहने में खतरा है। मैं तुम्हें और कुछ नहीं बता सकती।"

"ऐसा क्यों माता जी ? बताइए।" कुमार को पूछे बिना चैन नहीं था।

"नहीं बेटा ! सुनोगे तो दुखी होगे," माँ ने उत्तर दिया।

"नहीं माँ, मैं दुखी नहीं होऊंगा, मुझे सारी बात बताओ।"

यह सुनकर माँ चुप हो गयी। छल-छल आँसू आँखों से उसके गालों पर बहने लगे।

"रहने दो माँ ! बताने से दुख होता है तो मत बताओ," कुमार बोला।

"नहीं बेटा। अब समय आ गया है। तुम्हें सब जान ही लेना चाहिए। जान लोगे तो आगे के लिए सावधान रहोगे।"

माँ ने बताना शुरू किया, "हम इस जंगल में तब से रह रहे हैं जब तुम एक साल के थे। तुम्हें क्या याद होगा कि इससे पहले हम कहाँ रहते थे। इससे पहले हम एक शानदार महल में रहते थे, और बेटा, तुम्हारे पिता एक राजा थे। इकलौते होने के कारण तुम्हीं को गद्दी मिलती। लेकिन भाग्य में कुछ और ही लिखा था। जिस रात तुम्हारा जन्म हुआ, महल में खुशियों की धूम मची थी। मेरी तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए मैं सो गयी। जब मेरी नींद खुली तब आधी रात थी। धाय और

दासियां सब खर्राटे ले रही थीं। मैंने धीरे से आंखें खोलीं। मुझे लगा जैसे कोई प्रकाश की मूर्ति कमरे से बाहर जा रही है। मैंने सुन रखा था कि जैसे ही किसी बच्चे का जन्म होता है, भाग्य का देवता आकर उस बच्चे के माथे पर उसकी किस्मत लिख जाता है।

"भाग्य का देवता चुपके से आता और चला जाता है। पर कभी हम उसे देख भी लेते हैं। मैं समझ गयी कि हो न हो, यह भाग्य-देवता ही है। जल्दी-जल्दी मैं उठी और उसके सामने घुटने टेक कर बोली, 'बताइए, मेरे बच्चे के भाग्य में क्या लिखा है?' भाग्य का देवता चुप रहा। मैंने फिर पूछा, 'जब तक आप मुझे मेरे बच्चे का भाग्य नहीं बतायेंगे मैं आपको जाने नहीं दूंगी।' भाग्य-देवता मान गया। लेकिन जो उसने बताया उससे मुझ पर मानो बिजली गिर गयी। उसने कहा कि तुम सारी जिन्दगी निर्धन रहोगे।"

"कुछ दिन बाद एक दुर्घटना में तुम्हारे पिता चल बसे। प्रधान मंत्री, जो तुम्हारे पिता का विश्वासपात्र था, बड़ा मुंहजोर हो गया था।"

"उसने हम दोनों को मरवाने का षड्यंत्र रचा। लेकिन इसका मुझे किसी तरह से पता चल गया। मेरे लिए तुम्हारा जीवन राजपाट से बढ़ कर था। एक रात चुपके से भागकर मैं तुम्हें इस जंगल में ले आयी। वही धूर्त

प्रधान मंत्री अब राजा बन बैठा है। उसे मालूम नहीं कि हम यहाँ रहते हैं। इसीलिए, बेटा, यहाँ से कहीं जाना नहीं चाहती।"

"और हाँ, भाग्य-देवता ने मुझे भरोसा दिलाया था कि तुम निर्धन होते हुए भी भूखे कभी नहीं रहोगे। भाग्य-देवता तुम्हारे लिए लिख गया है कि हर रात एक कस्तूरी-मृग अवश्य तुम्हारे जाल में फंसेगा। पिछले कई सालों तक मैं जाल बिछाती रही। अब दो सालों से तुम यह काम कर रहे हो। यह सब देखकर मेरा कलेजा मुँह को आता है। लेकिन किया भी क्या जाय। भाग्य में लिखा ही ऐसा है। सारा जीवन ऐसे ही बिताना होगा।"

कुमार ने माँ की बात बड़े ध्यान से सुनी। थोड़ी देर वह चुप रहा फिर बोला, "माता जी, कितने दुख की बात है कि एक रानी होते हुए भी आपको इतना कष्ट उठाना पड़ रहा है। आप महल में होतीं तो आपको राजमाता का आदर मिलता। जहाँ तक मेरी बात है, मेरे लिए जंगल में रहना दुख-दायी नहीं। मैंने इस जीवन के सिवा और कुछ देखा ही नहीं। खैर, जो हुआ सो हुआ। अब मुझे पता चल गया है। अब मैं चुप नहीं बैठ सकता। उस कपटी प्रधान मंत्री को मजा चखा कर ही रहूँगा। अपना राज्य भी उससे वापस लूंगा।"

माँ ने यह सुना और बोली, "अपना जी क्यों हलकान करते हो, बेटा। किस्मत में जो लिखा होता है, वही होता है।"

"मैं अपनी किस्मत को बदलूंगा," यह बात कुमार ने ऐसे दृढ़ स्वर में कही कि उसकी माँ उसका मुंह ताकती रह गयी।

इसके बाद कुमार भी चुपचाप बैठा काफी देर तक सोचता रहा। फिर अचानक उसका चेहरा चमक उठा। उसने पूछा, "माता जी, क्या भाग्य-देवता ने आपको विश्वास दिलाया था कि मैं हर रात एक कस्तूरी-मृग जरूर पकड़ूंगा ?"

"हाँ," माँ ने उत्तर दिया।

"बहुत अच्छा। अब मैं जान गया हूँ कि मुझे अपने भाग्य से लड़ाई कहाँ से शुरू करनी चाहिए," कुमार ने कहा।

कुमार हर शाम दस जाल अलग-अलग बिछाया करता था। उस दिन उसने केवल पाँच ही बिछाये। ऐसा होने पर भी एक मृग जाल में फंस ही गया।

अगली शाम को उसने केवल एक ही जाल बिछाया, फिर भी एक मृग उसमें फंस गया।

अगले दिन ऐसी जगह जाल बिछाने के बजाय जहाँ मृग आ सकते थे, उसने कुटिया की छत पर जाल बिछाया। ऐसा करने पर भी सवेरे एक मृग जाल में फंसा मिला।

अब अगली शाम को उसने ताड़ के पेड़ पर जाकर जाल बिछाया। लेकिन सवेरे उसमें भी एक मृग फंसा हुआ देखा गया।

उससे अगली शाम को उसने फिर ताड़ के पेड़ पर जाल बिछाया मगर पेड़ के चारों ओर आग सुलगा दी।

उस रात अचानक उसकी नींद खुली तो उसने देखा कि उसके बिस्तर के पास कोई बुरी तरह हाँफ रहा है। अनोखा, चमकदार शरीर, मगर आधा

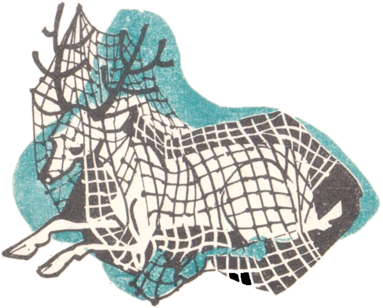

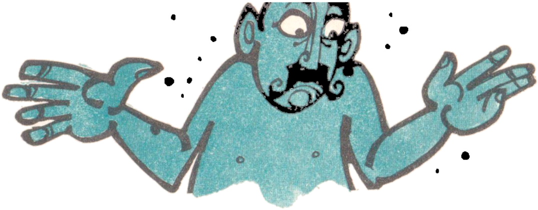

जला हुआ । यह और कोई नहीं, स्वयं भाग्य का देवता ही था ।

"पेड़ पर जाल बिछाने और नीचे आग सुलगाने से तुम्हारा मतलव क्या है ? तुम किस शरारत पर तुले हो ?" भाग्य-देवता ने क्रोधित होकर पूछा ।

"मैं किसी शरारत पर नहीं तुला हूँ । मैं तो वस अपने पिता के प्रधान मंत्री की शरारत का अन्त कर रहा हूं । मैं अपना राज्य वापस चाहता हूँ," कुमार ने उत्तर दिया ।

"लेकिन तुम्हारे भाग्य में एक निर्धन वन कर रहना बदा है," भाग्य-देवता ने कहा ।

"लेकिन मेरे भाग्य में यह भी वदा है कि हर रात मेरे जाल में एक मृग फंसेगा । फिर तो मैं जहां चाहूँगा, जाल विछाऊंगा । आप इसमें क्यों आपत्ति करते हैं ?" कुमार बोला ।

"लेकिन तुम यह नहीं सोचते कि हर रात तुम्हारे जाल में एक मृग फंसाने के लिए मुझे मृग को उठाकर पेड़ पर चढ़ना पड़ता है । ऐसा मैं कब तक कर सकता हूँ ?" भाग्य-देवता ने शिकायत की ।

"कल मैं जंगल में सबसे ऊँचे पेड़ पर चढ़कर जाल बिछाऊंगा और पेड़ के नीचे चारों तरफ खूब तेज आग सुलगाऊंगा। यही नहीं, पेड़ पर मैं सरसों के तेल का छिड़काव भी कर दूंगा," कुमार ने भाग्य-देवता की बात पर कोई ध्यान न देते हुए कहा।

भाग्य का देवता गुस्से से गुर्राया। थोड़ी देर बुड़बुड़ाता रहा और फिर मुस्कराया। "तुम बहुत चालाक हो। तुम्हारे इरादे को देखते हुए मुझे तुम्हारा भाग्य फिर से लिखना होगा।"

और उस रात भाग्य देवता ने उसके माथे से पुरानी लकीरें मिटाकर नयी रेखाएं बना दीं।

और फिर कुछ ही दिनों में सुनने में आया कि राज्य की जनता ने विद्रोह कर दिया है और प्रधान मंत्री मारा गया है।

तभी कुमार महल में पहुँचा। उसे देखते ही उसकी बूढ़ी धाय ने पहचान लिया। फिर क्या था। यह खबर सब ओर फैल गयी। सारी जनता में खुशी की लहर दौड़ गयी। प्रजा ने कुमार को अपना राजा घोषित कर दिया।

अब हर कोई देख सकता था कि मनुष्य चाहे तो किस तरह अपना भाग्य पलट सकता है।

9. दो लड़कियाँ और कमल का फूल

कहीं दूर, एक टीले पर एक पुराना मंदिर था। वहाँ एक बूढ़ा पुजारी था। बुढ़ापे से उसकी कमर झुक गयी थी।

उषा और ललिता, दो सहेलियां, इस मंदिर में रोज़ आया करती थीं। पुजारी से बातें करना उन्हें बड़ा अच्छा लगता था। वे कितनी-कितनी देर तक पुजारी को रंग-बिरंगे फूलों से मूर्ति सजाते देखती रहतीं।

तड़के ही वे दोनों झाड़ियों वाले रास्ते से नाचती-कूदती, आँख-मिचौनी खेलती हुई, टीले पर जा चढ़तीं।

उनका शोर सुनकर फाख्ता-चिड़ियां नींद से चौंक जातीं और उनींदे स्वर में कहतीं, "अरे मेरे राम! ये बड़ी चिड़ियां कितना शोर मचाती हैं।" तभी पूंछ मटकाती हुई कोई गिलहरी उधर आ निकलती और अकड़कर कहती, "ये अपने को समझती क्या हैं? मुझे ये आंखमिचौनी सिखायेंगी? देखो तो इनकी ढिठाई!" ऊपर उड़ती हुई फुदकी चिड़िया फुसफुसाती, "वाह री आजकल की छोकरियाँ! रंग वैसा ही चुन लिया जैसे मेरे कोट का है। मुझे चिढ़ाना चाहती हैं?"

लेकिन पगडंडी के दोनों ओर लगे गुलाबी, नीले, पीले और जामुनी फूल हवा में मस्ती से झूलते हुए बुदबुदाते, "ललिता और उषा! देखो, हम कैसे खिले हुए हैं। तुम चाहो तो तोड़कर हमें मंदिर में मूर्ति के लिए ले जाओ।"

ललिता और उषा खुशी-खुशी पुजारी को देने के लिए फूल तोड़ने लगतीं। उन्हें फूल तोड़ते देख अगर किसी को अफसोस होता तो वे थीं एक से दूसरे फूल पर उड़नेवाली तितलियां। बूढ़े की नज़र कमजोर थी। मगर वह फूलों को टटोल कर ही उनके सही नाम बता देता।

मूर्ति को सजाते हुए वह लड़कियों से बातें करता जाता, "अरे, चमेली लायी हो ! भई वाह ! ईश्वर तुम्हें इनके जैसा पवित्र रखे । कभी कहता, आज गुलाव लेकर आयी हो । है न ? ईश्वर तुम्हें सदा सवका प्यारा बनाये, सदा सुखी रखे ।"

"और अगर मैं कमल लाऊं तो, पुजारी जी ?" एक शाम उषा ने पूछा ।

"कमल ! अरे वाह, उसका क्या कहना ! वह तो सव फूलों का राजा है, राजा ! उससे तो भगवान खुश होते हैं । कोई भक्ति-भाव से कमल चढ़ाये तो ईश्वर उसे शरण में ले लेते हैं । उसका सदा कल्याण होता है ।"

यह सुनकर उषा वड़ी खुश हुई । वह इधर से उधर नाचती फिर रही थी । ललिता वड़े असमंजस में थी, "लेकिन तुम्हें कमल मिलेगा कहाँ से ?"

उषा इतनी कच्ची नहीं थी कि झट भेद वता देती । ललिता की वात सुनकर वह मुस्कराती रही । ललिता के वहुत खुशामद करने पर ही उसने यह भेद वताया, "पहाड़ी के उस सिरे पर वह पुरानी तलैया है न ! मैंने वहाँ कमल की कली खिली देखी थी । आज रात को कली फूल वन जायगी । कल सबेरे-सबेरे तोड़कर उसे ले आऊंगी ।"

"लेकिन वह तलैया तो मेरे वापू की है," ललिता ने तुनक कर रौव जमाते हुए कहा ।

उषा ने इस वारे में नहीं सोचा था । वह अपनी बात पर अड़ी थी । "होगी तुम्हारे वापू की, मगर उधर कोई भी तो नहीं जाता । कली खिल

कर फूल बनती, और फूल सूख कर मुरझा भी जाता, मगर किसी को पता न चलता। मैंने उसे देखा है, उसे तोड़ूंगी भी मैं ही।"

"यह कैसे हो सकता है ? तलैया मेरे बापू की है।"

"तो क्या हुआ ?" "होगा क्या ?"

"मैं ही कमल तोड़ूंगी ।"

और उस शाम दोनों सहेलियां चुपचाप, मुंह फुलाये, अपने-अपने घर चली गयीं।

अगले दिन अभी सवेरा होने को था कि उषा तलैया की ओर निकल

गयी । दौड़-दौड़ कर उसने सारा रास्ता पार किया । इसी बीच आसमान का रंग गहरे भूरे से हल्का गुलाबी हो गया । जब तलैया सामने आ गयी तो उषा की खुशी का कोई ठिकाना न रहा । लेकिन रह-रहकर उसे ललिता का भी ध्यान आ रहा था जो उसे उदास कर देता था। बेचारी ललिता !

और तभी सूर्य की धुंधली रोशनी में जो उसने देखा, उससे कलेजा धक

से रह गया। कोई तलैया में से बाहर निकल रहा था। वह और कोई नहीं, ललिता ही थी। उसके हाथ में कमल का फूल था।

उषा एक झाड़ी की ओट में छुप गयी। ललिता जल्दी-जल्दी पहाड़ी पर चढ़ रही थी। अपने आँसुओं को रोककर उषा भी उसके पीछे-पीछे चलने लगी। बार-बार उसके मन में यह ख्याल आ रहा था कि जिसे मैंने सबसे अच्छी सहेली समझा, उसी ने धोखा दिया।

ललिता मंदिर में पहुँच पुजारी के सामने खड़ी थी। पुजारी जी तभी झरने में स्नान कर पूजा के लिए आये थे।

"कौन है ?" बूढ़े पुजारी ने पूछा।

"मैं . . . मैं हूँ। कमल ले कर आयी हूँ।"

"कमल ! अरे वाह ! मैं इसे तुम्हारे नाम से मूर्ति पर चढ़ाऊंगा। कौन हो तुम ? उषा न ? मुझे ठीक-ठीक सुझायी नहीं देता। हमेशा उषा और ललिता में गड़बड़ा जाता हूँ।"

ललिता चुप रही। उषा जो पीछे छुपी सब देख रही थी, अपने आंसू रोक न सकी।

"उषा ! तुम हो ?" पुजारी ने फिर पूछा। इस बार ललिता बोली, "हां पुजारी जी ! यह कमल उषा के नाम से भगवान पर चढ़ा दें।"

"नहीं नहीं !" पीछे छिपी उषा चिल्लायी, "पंडित जी, यह फूल ललिता लेकर आयी है।"

"लेकिन फूल ढूंढा तो तुम्हीं ने था। मैंने उसे चुराया है," यह कहते हुए ललिता फूट-फूट कर रोने लगी।

"लेकिन यह कमल है तो तुम्हारे बापू की तलैया का," यह कहते हुए उषा के गालों पर भी आँसू ढुलक रहे थे।

'तो क्या हुआ ?"

उषा ने कहा, "कमल, तुम्हारे नाम से ही चढ़ाया जायेगा।"

और तब बड़ी नरमी से बीच में पड़ते हुए पुजारी जी बोले, "कोई बात नहीं। कोई बात नहीं। कमल को मूर्ति पर चढ़ाते हुए मैं तुम दोनों का नाम

ले लूंगा । भगवान अपना हाथ तुम दोनों के सर पर रखेगा । तुम दोनों को प्यार करेगा । वड़े होकर तुम दोनों नेक इंसान बनोगी ।"

घर लौटते हुए उषा और ललिता ने एक दूसरे की ओर देखा और अचानक हँस पड़ीं . . . । हँसती जायें । हंसती जायें । नेक इंसान तो वे अभी से बन गयी थीं । पहले की तरह नाचती, झूमती, गाती वे चली जा रही थीं । और एक वार फिर नींद से चौंक कर उनींदे स्वर में फाख्ता कह रही थी, "अरे मेरे राम, ये बड़ी चिड़ियां कितना शोर मचाती हैं ।"

क्वालिटी इंटरप्रायज़ेज, नयी अनाज मंडी, दिल्ली-110 006 द्वारा मुद्रित।

रु० 6.00

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया